शिक्षा के कार्य
(FUNCTIONS OF EDUCATION)

व्यक्ति के विकास के लिए शिक्षा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसका कार्यक्षेत्र बहुत विस्तृत है। **एम. एल. जैक्स** (M. L. Jacks) के शब्दों में, ''शिक्षा को बहुत से कार्य करने हैं। इसका मुख्य कार्य मौलिक बुराई को अर्जित अच्छाई में बदलना है। शिक्षा का कर्त्तव्य है कि वह बालक को अपनी बात सोचने के योग्य बनाए, कठोर परिश्रम का आदर करना सिखाए, अच्छे मित्र बनाना सिखाए तथा शाश्वत वास्तविकताओं के लिए रुचि व भावना रखना सिखाए।'' ("There is a plenty of work for education to do; its prime task is to transform original evil into acquired good. Education must enable the child to think for himself, to respect hard work, to have good fellowship, to have taste and sense of eternal realities.")

शिक्षा के कार्यों को निम्नलिखित वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है—

I. शिक्षा के सामान्य कार्य (General Functions of Education)

II. शिक्षा के मानवीय जीवन में कार्य (Functions of Education in Human Life)

III. राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के कार्य (Functions of Education in National Life)

I. शिक्षा के सामान्य कार्य (General Functions of Education)

1. जन्मजात शक्तियों का विकास (Manifestation of Innate Powers)—शिक्षा द्वारा जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है तथा उन्हें बाह्य रूप प्रदान किया जाता है। शिक्षार्थी को अपनी क्षमताओं, योग्यताओं व शक्तियों का बोध नहीं होता जो उसके अन्दर विद्यमान होती हैं और यह शिक्षा ही है जो उसे उनके प्रति जागरूक बनाती है। पेस्टालॉजी (Pestalozzi) ने कहा भी है, ''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का प्राकृतिक, समरूप तथा प्रगतिशील विकास है।'' ("Education is natural, harmonious and progressive development of man's innate powers.")

2. व्यक्तित्व का समरूप विकास (Harmonious Development of Personality)—प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व विकास की अवस्था में होता है। शिक्षा द्वारा व्यक्तित्व के विकास के लिए सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं। व्यक्ति की परिवर्तनशील प्रकृति को ध्यान में रखते हुए विकास की प्रक्रिया भी मानव विकास के स्तर के अनुरूप होनी चाहिए। यदि व्यक्ति के व्यक्तित्व का समरूप विकास न हो तो यह कहा जा सकता है कि उसकी शिक्षा अधूरी है। व्यक्तित्व के समरूप विकास में शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक तथा आध्यात्मिक तत्वों का विकास शामिल होता है।

3. प्रवृत्तियों का नियन्त्रण, पुनःनिर्देशन तथा शोधन (Control, Redirection and Sublimation of Instincts)—प्रत्येक बालक कुछ आधारभूत प्रवृत्तियों के साथ उत्पन्न होता है। ये प्रवृत्तियाँ उसकी क्रियाओं को दिशा प्रदान करती हैं तथा परिवर्तित करती हैं।

14 प्रवृत्तियाँ (Mackdual) - चिन्तन, तर्क, विवेक; निर्णय; क्रोध
लालच, ईर्ष्या; द्वेष

Scanned with CamScanner

शिक्षा का कार्य इन प्रवत्तियों का नियन्त्रण, पुन:निर्देशन तथा शोधन करना होता है, जिससे व्यवहार की ऐच्छिक प्रवृत्ति का विकास किया जा सके, जो व्यक्ति की अच्छाई के लिए हो तथा समाज की भलाई के लिए हो। इन्हीं के आधार पर जीवन के उच्च आदर्शों की प्राप्ति सम्भव हो सकती है।

4. अच्छे नागरिकों का निर्माण (Making of Good Citizens)—एक लोकतांत्रिक देश के विकास के लिए अच्छे नागरिकों की आवश्यकता होती है। उत्तरदायित्व की भावना, सहयोग, भ्रातृत्व, प्रेम, सेवा, कर्त्तव्य परायणता तथा नेतृत्व के गुण अच्छी नागरिकता के गुण माने जाते हैं। शिक्षा ही एक ऐसी सृजनात्मक प्रक्रिया है जो अच्छे नागरिक में इन गुणों का निर्माण व विकास करती है। शिक्षा का परम कार्य विद्यार्थियों को राज्य में उत्तरदायित्व तथा नागरिक के कर्त्तव्य-पालन के लिए तैयार करना है।

5. सभ्यता व संस्कृति का संरक्षण (Preservation of Culture and Civilization)—प्रत्येक राष्ट्र को अपनी संस्कृति व सभ्यता पर गर्व होता है और वह इसे संरक्षित रखना चाहता है। **ओटावे** (Ottaway) के अनुसार, ''शिक्षा का एक कार्य नई पीढ़ी तथा प्रभावी सदस्यों को समाज के सांस्कृतिक मूल्य और व्यवहार के नमूने सौंपना है।'' ("One of the tasks of education is to handover the cultural values and behaviour patterns of the society to his young and potential members.") इस प्रकार शिक्षा का कार्य है देश की सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना तथा एक वंशज से दूसरे वंशज तक इसे हस्तान्तरित करना।

6. नेतृत्व के गुणों का विकास (Development of Qualities of Leadership)—लोकतन्त्र की सफलता नि:सन्देह केवल कुशल नेताओं पर निर्भर करती है। शिक्षा का कार्य है शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक क्षेत्रों में सभी स्तरों पर नेतृत्व का प्रशिक्षण प्रदान करना। नेतृत्व का अर्थ केवल राजनैतिक नेतृत्व नहीं है। जीवन के सभी पक्षों में उपयुक्त नेतृत्व का विकास होना चाहिए। शिक्षा विद्यार्थियों में आवश्यक मूल्यों का विकास करती है जिससे प्रभावी एवं कुशल नेतृत्व के आवश्यक गुणों का विकास करने में सहायता मिलती है।

7. वातावरण के अनुकूल बनाना (Make Adjusted to Environment)—शिक्षा का कार्य है व्यक्ति को वातावरण तथा समाज के लिए तैयार करना। व्यक्ति पर वातावरण का प्रभाव वंशानुक्रम से अधिक अवश्य पड़ता है किन्तु कितना ? शिक्षा वातावरण का एक भाग है। शिक्षा इसके लिए दो प्रकार के कार्य करती है—एक तो व्यक्ति को पर्यावरण के साथ अनुकूलन करने के योग्य बनाना और दूसरा उसे पर्यावरण को बदलने योग्य बनाना। मनुष्य केवल परिस्थितियों का दास ही नहीं है अपितु इसका निर्माता भी है।

8. प्रौढ़ जीवन के लिए तैयारी (Preparation for Adult Life)—आज का बालक कल का नागरिक है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा का एक प्रमुख कार्य है बच्चों में उन योग्यताओं तथा क्षमताओं का विकास करना, जिसके परिणामस्वरूप जब वह वयस्क हो तो अपने जीवन की समस्याओं का हल स्वयं ढूँढ सके। अत: शिक्षा एक साधन है जो बालक को प्रौढ़ जीवन के लिए तैयार करती है।

9. जीवन को पूर्णता प्रदान करना (Provides Complete Living)—शिक्षा का यह कार्य हरबर्ट स्पेन्सर की देन है। उसने शिक्षा के लिए क्रियाएँ तथा उनके लिए उपयुक्त

Scanned with CamScanner

विषयों की सूची दी है। आत्म-रक्षा की क्रिया, जीवन को परोक्ष रूप से बनाने की क्रिया, सन्तान रक्षा सम्बन्धी क्रिया, समाज रक्षा की क्रिया की पूर्ति के लिए शरीर-विज्ञान, पदार्थ-विज्ञान, बाल-मनोविज्ञान, भूगोल इतिहास आदि विषय पढ़ाए जाते हैं। शिक्षा व्यक्ति का विकास करके उसे जीवन की पूर्णता प्रदान करती है।

10. सामाजिक भावना का विकास (Development of Social Feeling)—मानव एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही जन्म लेता है तथा समाज में ही रहकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। समाज ही व्यक्ति को सभ्य बनाता है। विद्यार्थियों में सामाजिक भावना का विकास करना भी शिक्षा का कार्य है। शिक्षा व्यक्ति में सामाजिक गुणों का विकास करने में सहायक होती है।

इस प्रकार बालक के व्यक्तित्व का विकास शिक्षा प्रक्रिया पर निर्भर करता है। शिक्षा वह है जिसके द्वारा व्यक्ति व समाज के मूल्यों तथा आवश्यकताओं के अनुरूप बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास किया जाता है।

Scanned with CamScanner